P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-10* June- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जौनसारी जनजाति के विधार्थियों के गृह वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

Study of The Effect of The Home Environment of The Students of Jaunsari Tribe on Their Educational Achievement

Paper Submission: 05/06/2021, Date of Acceptance: 15/06/2021, Date of Publication: 26/06/2021

कृपाल सिंह
शाधे छात्र,
शिक्षा विभाग,
हे.न.ब.गढवाल (केन्द्रिय)
विश्वविद्यालय,
स्वामी रामतीर्थ परिसर
बादशाहीथौल, टिहरी गढवाल,
उत्तराखण्ड, भारत

सुनिता गोदियाल
प्राफेसेर,
शिक्षा विभाग,
हे.न.ब.गढवाल (केन्द्रिय)
विश्वविद्यालय,
स्वामी रामतीर्थ परिसर
बादशाहीथौल, टिहरी गढवाल,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

शिक्षा मनुष्य के जीवन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज के समय में अशिक्षित व्यक्ति को प्रायः उपेक्षा की दृष्टिकोण से देखा जाता है। अतः यह माता–पिता का कर्तव्य है कि वह अपने बच्चों को उपयोगी शिक्षा प्रदान करनें को अपना अहम् दायित्व समझें। उपयोगी शिक्षा के माध्यम से ही बालक की आदतों में सुधार होता है जिससे वह अपना जीवन उचित तरीके से ब्यतीत कर सकते हैं।

किसी भी व्यक्ति के आचरण के निर्माण में शिक्षा की प्रमुख भूमिका होती है और बालक को जिस प्रकार का वातावरण मिलेगा उसी के अनुरूप उसमें आदतो का निर्माण होता है। गृह वातावरण जितना प्रेरणादायक तथा शिक्षा प्रधान होता है, बालकों में समझने की क्षमता भी उतनी ही अधिक विकसित होती है। विद्यार्थियों में आदर्श गुणों का विकास करने तथा आदर्श नागरिक बनाने हेतु गृह वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रस्तुत शाधेपत्र ''जौनसारी जनजाति विधार्थियों के गृह वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' पर आधारित है, जिसमें सर्वेक्षण विधि द्वारा डॉ0 करूणा शकंर मिश्रा के द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। शैक्षिक उपलब्धि के लिए विधार्थियों के पिछले वर्ष के वार्षिक परीक्षा परिणामों का उपयोग किया गया है। शाधे में माध्यमिक स्तर के अन्तर्गत सरकारी विद्यालयों के 100 विधार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है।

Education plays an important role in making a man's life successful. In today's time, an uneducated person is often seen from the point of view of neglect. Therefore, it is the duty of the parents to consider their important responsibility to provide useful education to their children. It is only through useful education that the habits of the child are improved so that he can lead his life in a proper way.

Education plays a major role in the formation of the behavior of any person and according to the type of environment the child will get, habits are formed in it. The more inspirational and educational the home environment is, the more the ability to understand is developed in children. Home environment plays an important role in developing ideal qualities in students and making them ideal citizens. The present paper is based on "Study of the effect of home environment of Jaunsari tribal students on their academic achievement", in which questionnaire prepared by Dr. Karuna Shankar Mishra has been used by survey method. Previous year annual examination results of students have been used for academic achievement. In the school, 100 students of government schools have been taken as a sample under the secondary level.

मुख्य शब्द : गृह वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, जौनसारी जनजाति, माध्यमिक विद्यालय।
Home Environment, Educational Achievement, Jaunsari Tribe, Secondary School.

प्रस्तावना

शिक्षा एक सामाजिक प्रकिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एंव कौशल में वृद्वि करके उसके व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को सभ्य, सुसंस्कृत एंव योग्य नागरिक बनाया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति एंव समाज दोनों

निरन्तर विकास करते है और आजीवन सीखने के लिए उत्सुक रहते है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं उसके जीवन पर गृह वातावरण का प्रभाव आवश्यक रूप से पड़ता है। इसी वातावरण में वालक अपनें भावी जीवन की तैयारी करता है। इस प्रकार गृह वातावरण से तात्पर्य बालक के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कियाओं से है जो बालक को प्रभावित करता है, जिसमें परिवार की भूमिका अति महत्तवपूर्ण होती है। परिवार को वास्तव में बालक की प्रथम पाठशाला भी इसी लिए कहा जाता है। परिवार के वातावरण से बालक सबसे अधिक प्रभावित होता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि बालक का गृह वातावरण उचित हो ताकि उसे सीखने में अधिक कठिनाईयों का सामना ना करना पडें।

प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवं विकास निश्चित वातावरण में होता है, उपयुक्त वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाऐं अविकसित रह जाती है। अतः बालक को जिस प्रकार का वातावरण मिलता है, वैसी ही उसमें आदतो का विकास होता है, जैसे–जैसे बालक में शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। इन परिर्वतनों में गृह वातावरण के प्रभाव का प्रमुख योगदान रहता है। उत्तराखण्ड के जौनसारी जनजाति क्षेत्र में सयुंक्त परिवार प्रथा का प्रचलन है जिसमें दादा–दादी तथा माता–पिता के अलावा चाचा–चाची इत्यादि सभी एक साथ रहते हैं, जिनसे बालक अनेक प्रकार के गुणों कों सीखता है और उसका अनुसरण भी करता है। अतः इस शोध कार्य के द्वारा शोधकर्ताओं ने उत्तराखण्ड के जौनसारी जनजाति के गृहवातावरण का इस जनजाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध के विषय में अध्ययन किया है।

गृह वातावरण का छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध को लेकर में पूर्व में भी शोधकार्य किये गये है। जिनमें से कुछ प्रमुख हैं–

ओ0पी0मल्होत्रा (1990) ने "इम्पैक्ट ऑफ एजूकेशन ऑन द निकोबारीज़ ट्राइबल लाइफ एन्ड एडजस्टमेन्ट" नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया गया। इन्होनें अपने अध्ययन में निकोबार के जनजातीय समूह के रहन–सहन व गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया।

एस0के0लखेड़ा (1986) ने "एजूकेशनल प्राब्लम ऑफ द शिड्युल्ड ट्राइब प्यूपिल स्ट्डिंग इन जूनियर एण्ड सैकण्डरी स्कूल्स ऑफ ड्रिस्ट्रिक चमोली" नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया जिसमें इन्होंने इस तथ्य का पता लगाया कि चमोली जिले के जनजातिय लोंगो में औपचारिक शिक्षा का प्रसार कितना है और जनजातिय बच्चों की शैक्षिक समस्यायें क्या हैं।

सिंह एण्ड अहमद (2020) ने "जौनसारी जनजाति की महिलाओं का संस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में उनका योगदान का अध्ययन" नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया। जिसमें इन्होंने इस तथ्य का पता लगाया कि देहरादून जिले के जनजातिय जौनसारी जनजाति के महिलाओं का संस्कृतिक धरोहर संरक्षण में योगदान को दर्शाना तथा जौनसारी समाज में जनजातीय महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करना।

सिंह एण्ड गोदियाल (2021) ने "जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विधार्थियों के गृह वातावरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन" नामक शीर्षक पर शोध कार्य किया। जिसमें इन्होंने इस तथ्य का पता लगाया कि देहरादून जिले के जौनसारी जनजातिय जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विधार्थियों के गृह वातावरण के विभिन्न आयामों जैसे नियंत्रण, सुरक्षा, सजा, अनुरूपता, सामाजिक अलगाव, पुरूस्कार,विशेषाधिकार का अभाव, पोषण, अस्वीकृति, सहनशीलता, का अध्ययन किया।

प्रस्तुत शोध समस्या ''जौनसारी जनजाति विधार्थियों के गृह वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. जौनसारी जनजाति के छा़त्र एवं छात्राओं के गृह वातावरण का अध्ययन करना।
2. जौनसारी जनजाति के छा़त्र एवं छात्राओं के गृह वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

1. जौनसारी जनजाति के छा़त्र एवं छात्राओं के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. जौनसारी जनजाति कें छात्र एवं छात्राओं के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श में कुल 100 विधार्थियों का चयन किया गया है, जिसमें 50 बालक एवं 50 बालिकाऐं सरकारी माध्यमिक विद्यालय से चुनें गये है। प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक (सर्वेक्षण) शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

इस अध्ययन हेतु डॉ0 करूणा शकंर मिश्रा द्वारा निर्मित गृह वातावरण मापनी तथा विद्यार्थियों के पिछले वर्ष के वार्षिक परीक्षा परिणामों के आधार पर आंकड़ों को एक्त्र करके उपयोग किया गया है।

अध्ययन का परिसीमन

उत्तरांखण्ड राज्य के देहरादून जनपद के जौनसारी जनजातियों के विधार्थियों तक परिसीमित किया गया है। आयु स्तर 12 से 16 वर्ष आयु तक के कक्षा 9वीं से 10वीं तक के विद्यार्थियों तक सीमित किया को गया है।

आंकड़ों की व्याख्या एवं प्रस्तुतिकरण

परिकल्पना 01 जौनसारी जनजाति के छा़त्र एवं छात्राओं के गृह वातावरण एवं षैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-10* June- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका–01
जौनसारी जनजाति के छात्र एवं छात्राओं का गृह वातावरण

गृह वातावरण के घटक	लिंग	माध्य	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
नियंत्रण	छात्र	28.28	3.058	1.67	0.098
	छात्रा	27.26	3.049		
सुरक्षा	छात्र	31.84	4.560	1.069	0.288
	छात्रा	32.82	4.606		
सजा	छात्र	29.96	3.703	1.35	0.18
	छात्रा	28.96	3.703		
अनुरूपता	छात्र	35.60	3.659	0.297	0.767
	छात्रा	35.82	3.756		
सामाजिक अलगाव	छात्र	14.90	3.512	1.591	0.115
	छात्रा	13.64	4.360		
पुरूस्कार	छात्र	33.10	3.358	2.248	0.027
	छात्रा	34.72	3.833		
विशेषाधिकार का अभाव	छात्र	15.70	3.412	1.22	0.225
	छात्रा	14.78	4.097		
पोषण	छात्र	30.42	3.563	1.785	0.077
	छात्रा	31.76	3.936		
अस्वीकृति	छात्र	13.02	3.323	1.246	0.216
	छात्रा	12.06	4.316		
सहनशीलता	छात्र	25.86	2.564	1.586	0.116
	छात्रा	26.78	3.203		
गृह वातावरण	छात्र	258.68	15.479	0.024	0.981
	छात्रा	258.60	17.187		

स्वतन्त्रता स्तर 98 सार्थकता स्तर ** 0.05

ग्राफ–01

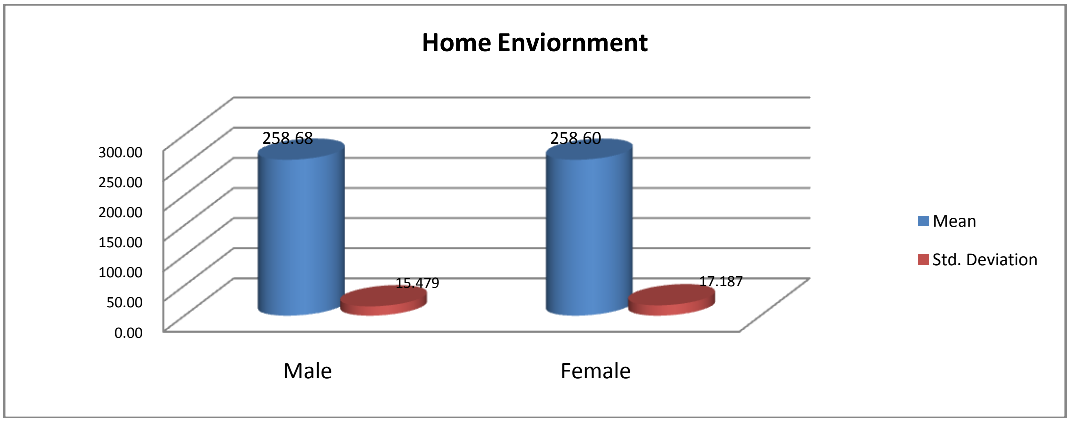

तालिका संख्या 1.0 से स्पष्ट है कि जौनसारी जनजाति के छात्र एवं छात्राओं के गृह वातावरण (आयामों) से प्राप्त मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता के लिए स्वतन्त्रता स्तर पर प्राप्त टी मान सार्थकता स्तर 0.05 स्तर सार्थक नही है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है, अर्थात् 'जौनसारी जनजाति के छात्र एवं छात्राओं के गृह वातावरण समान है।

तालिका संख्या– 02 जौनसारी जनजाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि

चर	लिंग	माध्य	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
शैक्षिक उपलब्धि	छात्र	501.20	63.083	3.285	0.05
	छात्रा	546.48	74.281		

स्वतन्त्रता स्तर 98 सार्थकता स्तर ** 0.05,

ग्राफ–02

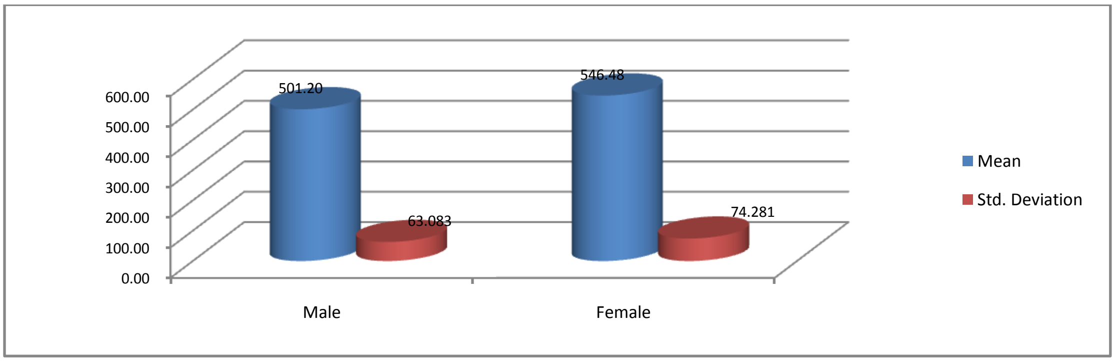

तालिका संख्या 02 एवं ग्राफ 02 का अवलोकन करने पर पता चलता है कि जौनसारी जनजाति के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 501. 20, 546.48 तथा प्रमाणिक विचलन 63.08, 74.28 है। माध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का अध्ययन करने के लिए टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। टी परीक्षण से प्राप्त मान 3.285 जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जा सकता है, अर्थात जौनसारी जनजाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।

परिकल्पना संख्या–02

"जौनसारी जनजाति कें छात्राओं के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नही है।

तालिका संख्या–03

जौनसारी जनजाति के विधार्थियों की गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध

चर	चर	सहसम्बन्ध	सार्थकता का स्तर
शैक्षिक उपलब्धि	नियंत्रण	-.124	.221
	सुरक्षा	-.099	.328
	सजा	-.052	.608
	अनुरूपता	-.025	.807
	सामाजिक अलगाव	-.098	.330
	तनाव	.095	.345
	विशेषाधिकार का अभाव	.083	.410
	पोषण,	-.017	.865
	अस्वीकृति	-.003	.973
	सहनशीलता	.052	.608
	गृह वातावरण	-.047	.639

तालिका संख्या 03 से स्पष्ट होता है कि जौनसारी जनजाति के विद्यार्थियों के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्राप्त सह संबंध गुणांक का मान .639 है जो निम्न धनात्मक सह–संबंध दर्शाता है। अतःइस प्रकार शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि जौनसारी जनजाति कें विद्यार्थियों के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध नही है।

निष्कर्ष

1. जौनसारी जनजाति के छात्र एवं छात्राओं का गृह वातावरण समान तथा शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है।
2. जौनसारी जनजाति कें विद्यार्थियों के गृह वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सुझाव

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं–

1. अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने गृह वातावरण को व्यवस्थित रखे।
2. विद्यालय में जनजातियों के बालक एवं बालिकाओं को यह शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जिससे कि वे अपने गृह वातावरण और शैक्षिक विकास में सामंजस्य स्थापित करें।
3. अभिभावकों का यह दायित्व बनता है कि बच्चों के शैक्षिक विकास को प्रभावशाली बनाने के लिए गृह वातावरण में संतुलन और शान्ति स्थापित करें।
4. जौनसारी जनजातियों के बालक एवं बालिकाओं को अपने गृह वातावरण से सामंजस्य स्थापित कर अपने शैक्षिक विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए।

1

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *राणा, जयपाल सिंह (2018):जौनसार–बावर का परिचय, प्रियंका प्रकाशन बसन्त विहार, देहरादून पृष्ठ 134*
2. *चावला, अनिता (2017) ''द रिलेशनशिप बिटवीन फैमेली एनवारमेंट एण्ड एकेडमिक एचीवमेंट'', इंडियन स्ट्रीम रिसर्च जर्नल ,*
3. *शाह टीकाराम, (2018): जौनसार भावर ऐतिहासिक सन्दर्भ : समाज संस्कृति और इतिहास, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून, उत्तराखण्ड,*
4. *जौनसारी रतनसिंह, (2016): जौनसार भावर एक सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक अध्ययन, गीतांजली प्रकाशन,देहरादून,*
5. *शर्मा, डी0 डी0. (2012). उत्तराखण्ड का लोक जीवन एवं संस्कति. हल्द्वानीः अंकित प्रकाशन.*
6. *सिंह, अरूण कुमार (2013) : 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'' मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
7. *'चौहान विद्यासिंह, (2019) भारत की जनजातियां, ट्रांस मीडिया प्रकाशन, श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड,*
8. *अग्रवाल श्वेता (2015): ''उच्च माध्यमिक विद्यालय के बालक एवं बालिकाओं का संघटनात्मक वातावरण एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' शिक्षा चिन्तन शोध पत्रिका, नोएडा, अंक जुलाई–सितम्बर 2015, पेज नं. 14–22*
9. *सिंह, नीलू (2016): विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालय वातावरण द्वारा पडने वाले प्रभाव का अध्ययन'' इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लेनरी एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च, वोल्यूम 1, अंक 2, अप्रैल 2016, पेज नं. 31–34*